सूखे से सुरक्षा के प्रयासों में जुटे किसान

भारत डोगरा

हाल के वर्षों में उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड और विंध्य क्षेत्र को सूखे का प्रकोप बहुत झेलना पड़ा है। यहां के अनेक विशेषज्ञों व सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इसे जलवायु बदलाव के व्यापक संकट के संदर्भ में समझने का प्रयास किया है। वजह कुछ भी हो, इस दौर में यहां के गांववासियों का दुख-दर्द बहुत बढ़ गया है। पर इस बढ़ते दुख-दर्द के बीच एक उम्मीद की किरण यह देखी गई है कि अनेक गांववासियों ने व्यक्तिगत व सामूहिक तौर पर सूखे से अपने खेतों व गांवों को सुरक्षित करने के कुछ उत्साहवर्धक प्रयास किए हैं। इस क्षेत्र की 16 स्वैच्छिक संस्थाओं ने ऐसे लगभग 50 प्रयासों का दस्तावेज़ीकरण हाल ही में किया है। इसका समन्वय गोरखपुर एन्वायरमेंटल एक्शन ग्रुप ने किया है।

अध्ययन से पता चलता है कि इनमें से अनेक प्रयासों में खेती का खर्च कम करने का प्रयास किया गया है। इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए गांव में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने के प्रयास किए गए हैं। जैसे पत्ती व गोबर की खाद बनाना, नीम व गोमूत्र पर आधारित कीटनाशक उपाय व जैविक खेती। इसके साथ देशी बीजों के उपयोग व सुरक्षा पर ज़ोर दिया गया है। स्थानीय स्थिति के अनुकूल मिश्रित खेती के तौर-तरीके व फसलें खोजने के प्रयास किए गए हैं। खेती, बागवानी, पशुपालन की मिश्रित व्यवस्था को इस तरह अपनाने का प्रयास किया गया है कि वे एक-दूसरे की पूरक बनें।

बांदा ज़िले में प्रेम सिंह के इस तरह के प्रयासों से उनके खेतों और बगीचे पर सूखे के असर को न्यूनतम किया जा सका। जिस समय इस क्षेत्र के अनेक किसान चारे के अभाव में अपने पशु छोड़ने को मजबूर हो रहे थे, प्रेम सिंह के प्रयासों से न केवल उनके अपने पशुओं को पर्याप्त चारा मिलता रहा अपितु गांव के अन्य पशुओं को भी निशुल्क चारा उपलब्ध कराया गया। उनके प्रयासों से पर्यावरण की रक्षा भी हुई है व आय भी अच्छी प्राप्त हुई है।

ललितपुर ज़िले में लालकिशन राजपूत ने बहुत यत्न से लगभग 5000 पेड़ों को सूखे के दिनों में भी पनपाया तथा वे दूसरों द्वारा छोड़ी गई गायों के लिए भी चारे की व्यवस्था कर सके।

जालौन ज़िले के किसान बृजनारायण पाठक ने आसपास के गांवों में घूमकर परंपरागत बीज एकत्र किए व इन बीजों के आधार पर उन्हें सूखे की स्थिति का सामना करने में अच्छी सफलता मिली।

अनेक गांवों में जल व नमी संरक्षण के सामूहिक प्रयासों से अब सूखे से काफी सुरक्षा प्राप्त की गई है। महोबा ज़िले के गंज चकरिया गांव में खेतों की मेड़बंदी, 21 चेक डेमों, 56 गली प्लग के निर्माण तथा 12 कुंओं को गहरा करने के बाद गांव अब सूखे से काफी सुरक्षित हुआ है। हमीरपुर ज़िले के डूंगोहता और अरतरा गांव में परंपरागत जल स्त्रोतों की सफाई करके उनके जलग्रहण क्षेत्रों में अतिक्रमण को हटाया गया तो तालाबों में फिर वर्षा का पानी पहुंच रहा है। एक शिक्षामित्र ओमप्रकाश ने तो तालाबों के जलग्रहण क्षेत्रों से अतिक्रमण हटाने की मुहिम चला दी है जिसका असर दूर-दूर तक हो रहा है। चरखारी के विख्यात तालाबों की सफाई के लिए चले व्यापक जन-अभियान में हज़ारों लोगों ने श्रमदान किया।

ऐसे प्रयासों से प्रतिकूल मौसम में उत्पन्न निराशा के दौर में भी कई गावों में आशा की किरण दिखाई दी है। इस तरह के आत्मनिर्भरता को बढ़ाने वाले प्रयासों को अधिक व्यापक स्तर पर अपनाने की ज़रूरत है। ***(स्त्रोत फीचर्स)***